



पगड़ी संभाल आंदोलन

चर्चा में क्यों?

वर्ष 1907 में पगड़ी संभाल आंदोलन शुरू करने वाले सरदार अजीत सहि की स्मृति में संयुक्त किसान मोर्चा (SKM) ने 23 फरवरी, 2021 को पगड़ी संभाल दिवस के रूप में मनाया।

- उल्लेखनीय है दिल्ली में चल रहे वरिध प्रदर्शन के भाग के रूप में किसान संगठनों द्वारा यह दावा किया जा रहा है कि संसद द्वारा पारित [कृषकानून](#) किसानों को अपनी ज़मीन कॉरपोरेट्स को बेचने के लिये मजबूर करेगा। किसान संगठनों की यह शिकायत वर्ष 1907 में किसान संगठनों द्वारा की गई शिकायत के समान है जिसके परिणामस्वरूप पगड़ी संभाल आंदोलन की शुरुआत हुई थी।

प्रमुख बंदि

पगड़ी संभाल आंदोलन:

आंदोलन के वषिय में:

- यह एक सफल किसान आंदोलन था जसिने वर्ष 1907 में ब्रिटिश सरकार को कृषि से संबंधित तीन कानूनों को रद्द करने के लिये वविश किया। ये तीन कानून थे-
- पंजाब भूमि अलगाव अधिनियम (Punjab Land Alienation Act) 1900, पंजाब भूमि उपनिवेशीकरण अधिनियम (Punjab Land Colonisation Act) 1906 और दोआब बारी अधिनियम (Doab Bari Act) 1907।
- इन अधिनियमों के चलते किसान भूमि के मालिक न रहकर भूमि के टेकेदार/अनुबंधक बन जाते और यदि किसान अनुमति लिये बनिा अपने खेत में एक पौधा भी छू लेता तो ब्रिटिश सरकार उस किसान को आवंटित भूमि वापस ले सकती थी।

आंदोलन का नारा:

- 'पगड़ी संभाल जट्टा' का नारा तथा आंदोलन का नाम जंग स्याल (Jang Sayal) अखबार के संपादक बांके लाल के गीत से प्रेरित था।

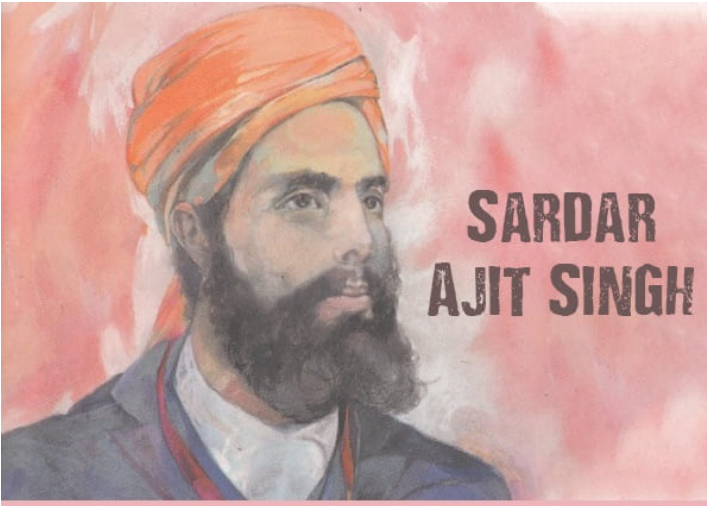
वरिध:

- यह वरिध प्रदर्शन हसिक हो गया था और आंदोलन के दौरान प्रदर्शनकारियों ने सरकारी इमारतों, डाकघरों, बैंकों आदि में लूटपाट की तथा टेलीफोन के खंभों को गरिा दिया।

आंदोलन के नेतृत्वकर्त्ता:

- इस आंदोलन के प्रमुख नेतृत्वकर्त्ता भगत सहि के चाचा अजीत सहि थे जिन्होंने कृषकानूनों से नाराज़ किसानों को संगठित करने का कार्य किया।
- भगत सहि के पति कशिन सहि और चाचा अजीत सहि ने अपने क्रांतिकारी मतिर घसीटा राम के साथ मलिकरभारत माता सोसाइटी (Bharat Mata Society) का गठन किया। इस सोसाइटी का उद्देश्य किसानों में व्याप्त नाराज़गी को ब्रिटिश सरकार के खिलाफ एक आंदोलन का रूप देना था।

- सूफी अम्बा प्रसाद, जयिा-उल-हक, लाल चंद फलक, दीन दयाल बांके, कशिन सहि और लाला राम शरण दास जैसे कई युवा क्रांतिकारी भारत माता सोसाइटी के सदस्य थे।



// Pagri Sambhal Jatta Movement

■ सरदार अजीत सहि:

◦ जन्म:

- इनका जन्म 23 फरवरी, 1881 को हुआ था। वह भारत में ब्रिटिश शासन के समय एक क्रांतिकारी और राष्ट्रवादी थे।
- वह भारतीय क्रांतिकारियों और अपने भतीजे [भगत सहि](#) के प्रेरणास्रोत थे।

◦ कार्य:

- वह पंजाब के शुरुआती प्रदर्शनकारियों में से थे, उन्होंने **ओपनविशकि सरकार की खुलेआम आलोचना** की।
- अपने भाई कशिन सहि के साथ उन्होंने बरार (मध्य प्रदेश) और अहमदाबाद जैसे अकाल प्रभावित क्षेत्रों तथा वर्ष 1905 में श्रीनगर एवं कंगला के बाढ़ और भूकंप प्रभावित क्षेत्रों में लोगों के लिये काम किया।
- उन्होंने **भारत माता पुस्तक एजेंसी (भारत माता सोसाइटी का हिस्सा)** की शुरुआत की जिसने स्पष्ट रूप से सरकार वरिधी प्रकाशनों के कारण ब्रिटिश सरकार का ध्यान आकर्षित किया।
- उन्होंने उन लोगों के साथ **एकजुटता हेतु एक नेटवर्क** बनाया, जो यूरोप के विभिन्न हिस्सों में भारत की आज़ादी के लिये संघर्ष कर रहे थे। इस अवधि में उन्होंने **भारतीय क्रांतिकारी संघ (Indian Revolutionary Association)** की भी स्थापना की।

◦ नरिवासन:

- मई 1907 में [लाला लाजपत राय](#) के साथ सरदार अजीत सहि को **बर्मा के मांडले में** नरिवासित कर दिया गया।
- हालाँकि अत्यधिक सार्वजनिक दबाव और भारतीय सेना में अशांति बढ़ने के कारण के कारण अक्टूबर 1907 में दोनों को रहि कर दिया गया था।

◦ ईरान पलायन:

- 1909 में सरदार अजीत सहि सूफी अम्बा प्रसाद के साथ ईरान भाग गए और वहाँ 38 वर्षों तक आत्मरोपति नरिवासन में रहे।

◦ मृत्यु:

- मार्च 1947 में वह भारत वापस लौटे तथा 15 अगस्त, 1947 को **डलहौज़ी, पंजाब** में उनकी मृत्यु हो गई।

नोट:

- मध्यकालीन युग के दौरान केवल कुलीन वर्ग के लोगों को पगड़ी पहनने की अनुमति थी परंतु 17वीं शताब्दी में [सखि](#) क्रांति के दौरान [गुरु गोबिंद सहि](#) ने इसे अवज्ञा का प्रतीक घोषित किया।
- उन्होंने पगड़ी से जुड़े भेदभाव को समाप्त करते हुए आम आदमी के लिये अपने आत्मसम्मान का दावा करने और उसे प्राप्त करने का मार्ग प्रसस्त किया।
- पगड़ी आम आदमी की गरमा का प्रतिनिधित्व करती है।
- वर्ष 1907 में 'पगड़ी संभाल जट्टा' अपनी पगड़ी को न गरिने देने (वस्तुतः और लाक्षणिक रूप से) का आह्वान था।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

